हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल (केंद्रीय) विश्वविद्यालय
श्रीनगर गढ़वाल, उत्तराखंड–246174

प्रो0 गुड्डी बिष्ट
संयोजक एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
हे0न0ब0ग0 केन्द्रीय वि0 वि0 श्रीनगर (ग0)

कला, संचार एवं भाषा संकाय

पाठ्यक्रम

हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा–विभाग

(राष्ट्रीय शिक्षा नीति : 2020 के अनुरूप)

बी॰ए॰ सप्तम एवं अष्टम सेमेस्टर

(Honours With Research)

(सत्र 2022–23, 2023–24, 2024–25 हेतु)

29/8/2025

प्रो. गुड्डी बिष्ट पंवार,
संयोजक एवं विभागाध्यक्षा – हिन्दी विभाग
हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल (केंद्रीय) विश्वविद्यालय,
श्रीनगर गढ़वाल, उत्तराखंड–246174

बी.ए. सप्तम सेमेस्टर (Honours With Research)

क्र.सं.	प्रश्नपत्र का नाम		कोड	क्रेडिट
1	आधुनिक काव्य (Core Major-I)		BAHR701	05
2	भारतीय काव्यशास्त्र (Core Major-II)		BAHR702	05
3	भाषा विज्ञान एवं हिंदी भाषा (Core Major-III)		BAHR703	05
4	i नाटक एवं रंगमंच (विकल्प-1)	(Core Major Elective-I)	BAHR704(i)	04
	ii राजभाषा प्रशिक्षण (विकल्प-2)		BAHR704(ii)	
	iii न्यू मीडिया (विकल्प-3)		BAHR704(iii)	
5	शोध प्रविधि (Research Methodology)		BAHR705	05
6	साहित्य और समाज (Minor-I)		BAHR706	04
			कुल क्रेडिट	**28**

बी.ए. अष्टम सेमेस्टर (Honours With Research)

क्र.सं.	प्रश्नपत्र का नाम		कोड	क्रेडिट
1	पाश्चात्य काव्यशास्त्र (Core Major-I)		BAHR801	05
2	i भाषा विज्ञान एवं हिंदी भाषा (विकल्प-1)	(Core Major Elective-II)	BAHR802(i)	04
	ii समकालीन हिंदी कविता (विकल्प-2)		BAHR802(ii)	
	iii ब्लॉग लेखन (विकल्प-3)		BAHR802(iii)	
3	शोध लेखन एवं नीतिशास्त्र (Research Writing & Ethics)		BAHR803	03
4	लघुशोध (Dissertation)		BAHR804	12
5	हिंदी साहित्य की वैचारिकी (Minor-II)		BAHR805	04
			कुल क्रेडिट	**28**

बी॰ए॰ सप्तम सेमेस्टर (Honours With Research)

प्रश्नपत्र - आधुनिक काव्य (BAHR701)

पूर्णांक – 100 (70+30)

क्रेडिट – 05

इकाई-1

- मैथिलीशरण गुप्त – साकेत का नवम् सर्ग।
- माखनलाल चतुर्वेदी – पुष्प की अभिलाषा।

इकाई-2

- जयशंकर प्रसाद – आनंद सर्ग।
- सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' – कुकुरमुत्ता।

इकाई-3

- नागार्जुन – गाँधी।
- अज्ञेय – नदी के द्वीप।

इकाई-4

- मुक्तिबोध – ब्रह्म राक्षस।
- राजेश जोशी – चाँद की वर्तनी।

संदर्भ ग्रंथ

1. आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियां – नामवर सिंह।
2. नई कविता और अस्तित्ववाद – रामविलास शर्मा।
3. समकालीन हिंदी कविता – परमानंद श्रीवास्तव।
4. कविता के नए प्रतिमान – नामवर सिंह।
5. आधुनिक हिंदी काव्य – डॉ॰ सत्यनारायण सिंह।
6. आधुनिक हिंदी कविता – डॉ॰ हरदयाल।

नोट – संपूर्ण पाठ्यक्रम से दीर्घ एवं लघुउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे।

Course Outcomes

आधुनिक काव्य

1. कविता के सामाजिक, राजनीतिक और दार्शनिक पक्षों का आलोचनात्मक मूल्यांकन।
2. आधुनिक हिंदी कविता को भारतीय और वैश्विक साहित्यिक संदर्भों में रखने की दृष्टि विकसित होगी।
3. शोध की दृष्टि से कविता में निहित विमर्शों जैसे– स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, राष्ट्रीय चेतना और पर्यावरणीय चेतना को पहचान सकेंगे।
4. छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता आदि आंदोलनों की विशेषताओं का विश्लेषण कर सकेंगे।

बी॰ए॰ सप्तम सेमेस्टर (Honours With Research)

प्रश्नपत्र - भारतीय काव्यशास्त्र (BAHR702)

पूर्णांक – 100 (70+30)
क्रेडिट – 05

इकाई-1

- काव्य का स्वरूप।
- काव्य–लक्षण, काव्य के तत्व।
- काव्य–प्रयोजन, काव्य–हेतु एवं काव्य–सृजन की प्रक्रिया।
- काव्य की आत्मा।

इकाई-2

- रस की परिभाषा, रस के अवयव एवं प्रकार।
- रस–निष्पत्ति एवं रस–सूत्र की व्याख्या।
- रसानुभूति की प्रक्रिया एवं स्वरूप।
- साधारणीकरण एवं सहृदय की स्थिति।

इकाई-3

- अलंकार सिद्धांत–मूल स्थापनाएं।
- अलंकारों का वर्गीकरण।
- रीति–सिद्धांत।
- रीति– अर्थ, परिभाषा और स्वरूप।
- रीति के भेद।
- रीति और शैली का काव्यात्मा से संबंध।

इकाई-4

- ध्वनि–सिद्धांत।
- ध्वनि– अर्थ, लक्षण और स्वरूप।
- काव्यात्मा के रूप में ध्वनि।
- ध्वनि तथा रस–सिद्धांत का संबंध।

संदर्भ ग्रंथ

1. रस–मीमांसा : आचार्य रामचंद्र शुक्ल।
2. रस–सिद्धांत : डॉ॰ नगेंद्र।
3. भारतीय काव्यशास्त्र : भगीरथ मिश्र।
4. भारतीय काव्यशास्त्र के नए क्षितिज : राममूर्ति त्रिपाठी।
5. भारतीय काव्यशास्त्र : डॉ॰ हरीश चंद्र वर्मा।
6. भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका : डॉ॰ नगेंद्र।
7. भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका : पंडित बलदेव उपाध्याय।
8. ध्वनि–सिद्धांत और हिंदी के प्रमुख आचार्य : त्रिभुवन राय।
09. साहित्य का स्वरूप : नित्यानंद तिवारी।
10. साहित्य सहचर : हजारी प्रसाद द्विवेदी।
11. साधारणीकरण और काव्यास्वाद : राजेंद्र गौतम।

नोट – संपूर्ण पाठ्यक्रम से दीर्घ एवं लघुउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे।

Course Outcomes

भारतीय काव्यशास्त्र

1. इस प्रश्नपत्र में भारतीय आलोक में काव्य की विभिन्न धाराओं को स्पष्ट करते हुए भारतीय काव्यशास्त्रियों द्वारा प्रदत्त सिद्धांतों के आधार पर छात्र–छात्राओं को काव्य, रस, अलंकार, रीति, वक्रोक्ति ध्वनि और औचित्य जैसे काव्यशास्त्रीय सिद्धांतों का शास्त्रीय एवं वैचारिक ज्ञान प्रदान किया जाता है, जिससे उनके अंदर साहित्य की समझ पैदा हो और वे विभिन्न विधाओं के संदर्भ में सैद्धांतिक संदर्भों को समझ सके।
2. छात्र–छात्राएं काव्य के विभिन्न घटकों की पहचान कर, उनका साहित्यिक विश्लेषण करने तथा सृजनात्मक अभिव्यक्ति में प्रयोग करने का कौशल अर्जित करते हैं।
3. छात्र–छात्राएं रस, अलंकार, ध्वनि और रीति की अवधारणाओं को विश्लेषणात्मक ढंग से काव्य–रचना और व्याख्या में लागू कर सकते हैं।
4. छात्र–छात्राएं काव्य की आत्मा, रसानुभूति, सहृदयता और साधारणीकरण जैसी अवधारणाओं के माध्यम से आलोचनात्मक दृष्टि और सौंदर्यात्मक संवेदनशीलता का विकास करते हैं।
5. छात्र–छात्राएं काव्य के माध्यम से मानवीय संवेदनाएं, नैतिक मूल्यों और सामाजिक सरोकारों की पहचान करते हैं और साहित्य के नैतिक पक्ष से जुड़ते हैं।
6. छात्र–छात्राएं काव्यशास्त्रीय ज्ञान का उपयोग शिक्षण, शोध, आलोचना, लेखन और साहित्य संपादन जैसे पेशेवर क्षेत्रों में करने के लिए तैयार होते हैं।

बी॰ए॰ सप्तम सेमेस्टर (Honours With Research)

प्रश्नपत्र - भाषा विज्ञान एवं हिंदी भाषा (BAHR703)

पूर्णांक – 100 (70+30)
क्रेडिट – 05

इकाई-1

- भाषा विज्ञान : स्वरूप एवं क्षेत्र।
- भाषा विज्ञान के अध्ययन की पद्धतियां।
- भाषा विज्ञान की विविध शाखाएं।
- भाषा विज्ञान का ज्ञान की अन्य शाखाओं से संबंध।

इकाई-2

- हिंदी की ध्वनियां– स्वर और व्यंजन।
- हिंदी शब्द संपदा।
- हिंदी की शब्द कोटियां– संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया–विशेषण।
- हिंदी की कारकीय व्यवस्था।
- हिंदी भाषा के क्रिया रूपों का सामान्य परिचय।

इकाई-3

हिंदी भाषा–संरचना

- ध्वनि–संरचना।
- शब्द–संरचना।
- रूप–संरचना।
- वाक्य–संरचना।

इकाई-4

भाषा के संवर्द्धन में कृत्रिम बुद्धिमता की उपयोगिता

- कृत्रिम बुद्धिमता और भाषा का संबंध।
- व्याकरणिक रूप से कृत्रिम बुद्धिमता की स्वीकारोक्ति।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में हिदी भाषा और कृत्रिम बुद्धिमता के प्रगामी प्रयोग।

संदर्भ ग्रंथ

1. हिंदी भाषा का इतिहास : धीरेंद्र वर्मा।
2. हिंदी भाषा का उद्गम और विकास : उदयनारायण तिवारी।
3. हिंदी भाषा : भोलानाथ तिवारी।
4. आधुनिक हिंदी के विविध आयाम : प्रो॰ कृष्ण कुमार गोस्वामी।
5. हिंदी का सामाजिक संदर्भ : रवींद्रनाथ श्रीवास्तव।
6. भाषा और भाषा विज्ञान : नरेश मिश्र।
7. भाषा विज्ञान : भोलानाथ तिवारी।
8. नवीन भाषा विज्ञान : तिलक सिंह।
9. भाषा विज्ञान एवं भाषाशास्त्र : कपिलदेव शास्त्री।
10. भाषा विज्ञान के सिद्धांत और हिंदी भाषा।
11. भाषा विज्ञान की भूमिका : देवेंद्र नाथ शर्मा।

नोट – संपूर्ण पाठ्यक्रम से दीर्घ एवं लघुउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे।

Course Outcomes

भाषा विज्ञान एवं हिंदी भाषा

1. इस पाठ्यक्रम से छात्र–छात्राएं भाषा एवं भाषा विज्ञान के स्वरूप, उसकी विविध शाखाओं और हिंदी भाषा की ध्वनियों, शब्द–संपदा व क्रिया–प्रणाली से संबंधित गहन आधारभूत ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।
2. छात्र–छात्राएं रूप, ध्वनि, शब्द, वाक्य–संरचना एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित भाषा उपयोग जैसे तकनीकी पक्षों को व्यावहारिक रूप से समझने और प्रयोग करने की क्षमता अर्जित कर सकते हैं। बहुभाषिकता जैसे संदर्भों में भाषा का व्यावहारिक एवं सैद्धांतिक पक्ष उजागर होने से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आधार पर भाषा की विविध शाखाओं का विवेचन एवं कार्यान्वयन किया जाएगा।
3. छात्र–छात्राएं हिंदी भाषा की संरचना और व्याकरणिक नियमों का उपयोग करके व्यावहारिक भाषा विश्लेषण एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता के अनुप्रयोग को व्यवहार में लाने में सक्षम होते हैं। विश्लेषणात्मक पद्धति द्वारा भाषा का विवेचन करने से उसके प्रति जिज्ञासा की समझ विकसित होगी तथा उसका विवेचन भाषा को सीखने में काम आएगा, जिससे वे प्रभावी रूप में अपनी बात लिखित व मौखिक रूप में व्यक्त करना सीखेंगे।
4. छात्र–छात्राएं हिंदी भाषा के अध्ययन के माध्यम से भाषाई विविधता, भारतीय भाषाई चेतना और समावेशी समाज की ओर नैतिक व मानवीय दृष्टिकोण विकसित करेंगे।
5. छात्र–छात्राएं भाषा विज्ञान और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के समन्वय से भाषा संसाधन, अनुवाद, शिक्षण तथा तकनीकी लेखन जैसे क्षेत्रों में रोजगार व स्वरोजगार प्राप्त कर सकते हैं।

बी॰ए॰ अष्टम सेमेस्टर (Honours With Research)

प्रश्नपत्र - नाटक एवं रंगमंच (BAHR703(i))

पूर्णांक – 100 (70+30)
क्रेडिट – 04

इकाई-1

- हिंदी नाटक का उद्‌भव।
- हिंदी नाटक का क्रमिक विकास।

इकाई-2

- लहरों के राजहंस – मोहन राकेश।

इकाई-3

- अंधायुग – धर्मवीर भारती।
- एक कंठ विषपायी – दुष्यंत कुमार।

इकाई-4

- संशय की एक रात – नरेश मेहता।

संदर्भ ग्रंथ

1. भरतमुनि का नाट्यशास्त्र।
2. भारतीय तथा पाश्चात्य रंगमंच – पं0 सीताराम चतुर्वेदी।
3. नाट्य निबंध – डॉ0 दशरथ ओझा।
4. हिंदी नाटकों का शास्त्रीय अध्ययन – डॉ0 दशरथ ओझा।
5. अंधायुग – जयदेव तनेजा।
6. रंगमंच कला और दृष्टि – डॉ0 गोविंद चातक।
7. आधुनिक नाटक का मसीहा – डॉ0 गोविंद चातक।

नोट – संपूर्ण पाठ्यक्रम से दीर्घ एवं लघुउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे।

Course Outcomes

नाटक एवं रंगमंच

1. विद्यार्थी नाटक एवं रंगमंच के इतिहास, प्रमुख लेखक, शैलियों और विधाओं की पहचान करते हुए, प्रसिद्ध नाटककारों और उनके नाटकों के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।
2. विद्यार्थी नाट्यपाठ को पढ़कर उसकी विषयवस्तु, पात्र और संदेश को समझते हुए रंगमंच की विभिन्न तकनीकों के प्रयोग को समझ सकेंगे।
3. विद्यार्थी किसी दृश्य का मंचन करने हेतु संवाद, हावभाव और मंच सज्जा का प्रयोग करते हुए पात्रों की भूमिका को अभिनय द्वारा व्यक्त करने में सक्षम होंगे।
4. विद्यार्थी नाटक की कथा, पात्रों और संवादों का विश्लेषण करते हुए यह मूल्यांकन कर सकेंगे कि किसी पात्र की भूमिका कथानक को किस प्रकार प्रभावित करती है।
5. विद्यार्थी स्वयं लघु नाटक लिखने, रूपांतरित करने या मंचन के लिए नया संवाद तैयार करते हुए रंगमंच की विभिन्न शैलियों का मिलाकर एक नवीन प्रस्तुतिकरण कर सकेंगे।
6. विद्यार्थी किसी नाट्य प्रस्तुति की कलातमक गुणवत्ता, अभिनय, निर्देशन एवं प्रभावशीलता का आलोचनात्मक मूल्यांकन करते हुए सामाजिक या सांस्कृतिक दृष्टिकोण से नाटक की प्रासंगिकता पर विचार सकेंगे।

बी॰ए॰ सप्तम सेमेस्टर (Honours With Research)

प्रश्नपत्र - राजभाषा प्रशिक्षण (BAHR703(ii))

पूर्णांक – 100 (70+30)
क्रेडिट – 04

इकाई-1 : हिंदी भाषा के विविध–संदर्भ

- संप्रेशण के माध्यम के रूप में भाशा और उसके घटक।
- राजभाषा की संकल्पना एवं उसकी संवैधानिक स्थिति (अनुच्छेद 343 से 351 तक)।
- राश्ट्रभाशा, राजभाशा और संपर्क भाशा।

इकाई-2 : भारतीय संविधान और हिंदी

- संविधान में भारतीय भाशाओं की स्थिति।
- राजभाशा संबंधी राश्ट्रपति के आदे ा (1952, 1955, 1960)।
- संपर्क भाशा के रूप में हिंदी।

इकाई-3 : संप्रति भाशा–नीति एवं राजभाषा अधिनियम

- राजभाषा अधिनियम 1963 (यथा संशोधित 1967)।
- द्विभाषी नीति और त्रिभाषा–सूत्र।
- हिंदी के प्रचार–प्रसार में विभिन्न हिंदी संस्थाओं की भूमिका।

इकाई-4 : राजभाशा आयोग एवं प्र ाासनिक हिंदी

- राजभाशा आयोग की रूपरेखा और कार्य।
- प्रशासनिक क्षेत्रों में हिंदी की स्थिति।
- प्र ाासनिक हिंदी : वि ोशताएं तथा व्यवहार के विविध रूप (वि ाश्ट प्रयुक्तियां– क्रिया भाब्द, पदबंध, अभिव्यक्तियां, सामान्य भाशा से राजभाशा के वि ाश्ट भाब्दों में अंतर, आवेदन, पंजीयन, सामान्य सरकारी पत्र, परिपत्र, कार्यालय ज्ञापन, कार्यालय आदे ा, टिप्पण, आलेखन, अर्धसरकारी मसौदा लेखन)।
- हिंदी भाशा का मानकीकरण : भाशा का मानक रूप, भाशा प्रयोग की विविधता, मानकीकरण की आधार इकाइयां।

संदर्भ ग्रंथ

1. भाषाई अस्मिता और हिंदी : रवींद्रनाथ श्रीवास्तव, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
2. हिंदी और उसकी उपभाषाएं : विमलेश कांति वर्मा, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार।
3. मानक हिंदी का स्वरूप : भोलानाथ तिवारी, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।
4. भाषा और समाज : रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
5. हिंदी भाषा की सामाजिक संरचना : भोलानाथ तिवारी, साहित्य सहकार, दिल्ली।
6. हिंदी विकास और स्वरूप : कैलाश चंद्र भाटिया, ग्रंथ अकादमी, दिल्ली।
7. प्रयोजनमूलक हिंदी की नई भूमिका : कैलाशनाथ पाण्डेय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
8. हिंदी भाषा का राजकाज में प्रयोग : डॉ॰ रामबाबू शर्मा।
9. राजभाषा हिंदी और उसका विकास : हीरालाल नाछेतिया।
10. हिंदी राष्ट्रभाषा, राजभाषा, जनभाषा : शंकर दयाल सिंह।

नोट – संपूर्ण पाठ्यक्रम से दीर्घ एवं लघुउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे।

Course Outcomes

राजभाषा प्रशिक्षण

1. विद्यार्थी राजभाषा के स्वरूप, उसकी शब्द संपदा एवं क्रिया प्रणाली से संबंधित ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
2. विद्यार्थी राजभाषा के प्रकार्यात्मक स्वरूप एवं व्यावहारिक प्रयोग करने की क्षमता विकसित कर सकते हैं।
3. विद्यार्थी राजभाषा के संवैधानिक पक्ष एवं महत्व को व्यवहार में लाने में सक्षम होंगे।
4. विद्यार्थियों में हिंदी भाषा एवं भारतीय भाषा भाषायी चेतना का समावेशी दृष्टिकोण विकसित होगा।
5. विद्यार्थी भारत सरकार के विभिन्न केंद्रीय संस्थाओं में राजभाषा अधिकारी, भाषा अधिकारी, अनुवादक, अन्य संगठनों में विभिन्न पदों पर रोजगार प्राप्त कर सकते हैं।

बी॰ए॰ सप्तम सेमेस्टर (Honours with Research)

प्रश्नपत्र - न्यू मीडिया (BAHR703(iii))

पूर्णांक – 100 (70+30)
क्रेडिट – 04

इकाई-1 : न्यू मीडिया : स्वरूप एवं अवधारणा

- न्यू मीडिया की परिभाषा और विकास।
- न्यू मीडिया के प्रमुख घटक (इंटरनेट, मोबाइल टेक्नोलॉजी, सोशल मीडिया)।
- न्यू मीडिया का प्रसार एवं महत्व।
- न्यू मीडिया बनाम पारंपरिक मीडिया।

इकाई-2 : हिंदी भाषा और न्यू मीडिया

- हिंदी भाषा और न्यू मीडिया का संबंध।
- डिजिटल क्रांति और हिंदी भाषा पर उसका प्रभाव।
- हिंदी न्यूज़ पोर्टल्स।
- हिंदी न्यू मीडिया में फेक न्यूज़ और सूचना का प्रसार।

इकाई-3 : न्यू मीडिया : तकनीकी पक्ष

- इंटरनेट पत्रकारिता।
- वेबसाइट।
- ब्लॉगिंग (वर्डप्रेस और ब्लॉगर)।
- पॉडकास्ट।

इकाई-4 : न्यू मीडिया : कानूनी एवं अन्य पक्ष

- साइबर कानून : सामान्य परिचय।
- हिंदी में डिजिटल एक्टिविज्म और जन आंदोलनों की भूमिका।
- हिंदी में ऑनलाइन शिक्षा और ई–लर्निंग प्लेटफॉर्म्स।
- हिंदी भाषा और कृत्रिम बुद्धिमत्ता।

संदर्भ ग्रंथ

1. सुरेश कुमार : इंटरनेट पत्रकारिता, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली।
2. संजय द्विवेदी (संपादक); सोशल नेटवर्किंग : नए समय का संवाद, यश पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
3. जगदीश्वर चतुर्वेदी : वर्चुअल रियलिटी, साइबर संस्कृति और इंटरनेट, एकेडेमिक पब्लिकेशन, दिल्ली।
4. डॉ॰ स्नेह लता : सोशल मीडिया और ब्लॉग लेखन, नटराज प्रकाशन, दिल्ली।
5. डॉ॰ हरीश अरोड़ा (संपादक) : पत्रकारिता का बदलता स्वरूप और न्यू मीडिया, साहित्य संचय प्रकाशन, दिल्ली।
6. प्रो॰ हरिमोहन : नए माध्यम, नई हिंदी, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली।
7. स्वर्ण सुमन; सोशल मीडिया : संपर्क क्रांति का कल आज और कल, हार्पर, दिल्ली।
8. वर्तिका नंदा : मीडिया और बाजार, सामयिक प्रकाशन, दिल्ली।
9. सुभाष चंद्र यादव : भारत विभाजन और हिंदी उपन्यास, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना।

नोट – संपूर्ण पाठ्यक्रम से दीर्घ एवं लघुउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे।

Course Outcomes

न्यू मीडिया

1. इस पाठ्यक्रम में न्यू मीडिया और पारंपरिक मीडिया के तुलनात्मक अध्ययन से विद्यार्थी मीडिया के ऐतिहासिक विकास और वर्तमान परिप्रेक्ष्य को समझ सकेंगे।
2. हिंदी भाषा और न्यू मीडिया के संबंध, डिजिटल प्रभाव, फेक न्यूज़ जैसे विषयों से छात्र भाषिक, सामाजिक और तकनीकी प्रक्रियाओं का अनुशासनिक ज्ञान प्राप्त करेंगे।
3. ब्लॉगिंग, वेबसाइट निर्माण, पॉडकास्टिंग, इंटरनेट पत्रकारिता जैसे घटकों से छात्रों में तकनीकी दक्षता और व्यावसायिक कौशल का विकास होगा।
4. छात्र सीखे गए तकनीकी कौशलों का ब्लॉग, पोर्टल, पॉडकास्ट, वेबसाइट आदि के माध्यम से व्यावहारिक उपयोग कर सकेंगे।
5. वे मीडिया साक्षरता, फेक न्यूज़ की पहचान और जवाबदेही आधारित सामग्री सृजन में कुशल होंगे।
6. डिजिटल एक्टिविज़्म और जन आंदोलनों में न्यू मीडिया की भूमिका के माध्यम से छात्र लोकतांत्रिक चेतना, नैतिकता और नागरिक जिम्मेदारियों को समझेंगे।
7. यह पाठ्यक्रम छात्रों को डिजिटल पत्रकारिता, ब्लॉगिंग, कंटेंट राइटिंग, सोशल मीडिया मैनेजमेंट जैसे रोजगारोन्मुख क्षेत्रों के लिए तैयार करता है। विद्यार्थी स्वयं का डिजिटल प्लेटफॉर्म (जैसे यूट्यूब चैनल, ब्लॉग, पोर्टल) स्थापित करने के लिए प्रेरित होंगे।

बी॰ए॰ सप्तम सेमेस्टर (Honours With Research)

प्रश्नपत्र - शोध–प्रविधि (BAHR705)

पूर्णांक – 100 (70+30)
क्रेडिट – 05

इकाई-1

i. शोध का अर्थ, स्वरूप
ii शोध के प्रकार
iii हिंदी शोध का इतिहास एवं पूर्वपीठिका

इकाई-2

i. शोध के मूल तत्व
ii साहित्यिक शोध की विशेषताएं
iii हिंदी शोध की वर्तमान स्थिति

इकाई-3

i. शोध कार्य का विभाजन
ii रूपरेखा, प्रस्तावना, भूमिका, लेखन
iii अनुक्रमणिका

इकाई-4

i. शोध विषय चयन
ii शोध संबंधी समस्याएं
iii एक अच्छे शोधार्थी के गुण
iv साहित्यिक शोध और समाजशास्त्रीय पद्धति

इकाई-5

i. शोध और तथ्य विश्लेषण
ii शोध और वैज्ञानिक प्रणाली
iii शोध प्रबंध का प्रस्तुतीकरण

संदर्भ ग्रंथ

1. शोध प्रविधि – डॉ॰ विनय मोहन।
2. अनुसंधान का स्वरूप – डॉ॰ सावित्री सिन्हा।
3. हिंदी शोध तंत्र की रूपरेखा – डॉ॰ मनमोहन सहगल।
4. अनुसंधान की प्रक्रिया – डॉ॰ सावित्री सिन्हा/विजयेंद्र स्नातक।
5. साहित्य के समाज की भूमिका – मैनेजर पांडेय।

नोट – संपूर्ण पाठ्यक्रम से दीर्घ एवं लघुउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे।

Course Outcomes

शोध–प्रविधि

1. शोधकर्ता साहित्यिक ज्ञान को संकलित करते हुए शोध के लिए एक ठोस नींव बनाने का प्रयास करेगा। साथ ही अपने शोध विषय से संबंधित मौलिक तथ्यों और जानकारी को संकलित करने का प्रयास करेगा।
2. शोधकर्ता साहित्यिक सामग्री को समझते हुए शोध उद्देश्य को समझने का प्रयास करेगा।
3. शोधकर्ता अपने संग्रहित ज्ञान को वास्तविक शोध प्रक्रिया में लागू कर सकेगा तथा साहित्यिक सिद्धांतों, विश्लेषणात्मक उपकरणों और विचारों को व्यावहारिक तरीके से लागू करने का दृष्टिकोण विकसित कर सकेंगे।
4. शोधकर्ता साहित्यिक रचनाओं और उनके सामाजिक संदर्भ को गहरे स्तर पर विभाजित और विश्लेषित कर सकेंगे।
5. शोधकर्ता साहित्यिक कृतियों के गुण, प्रभाव और महत्व का आलोचनात्मक मूल्यांकन कर सकेंगे।
6. शोधकर्ता विभिन्न विचारों और साहित्यिक सिद्धांतों को जोड़कर एक नया निष्कर्ष या दृष्टिकोण प्रस्तुत कर सकेगा।

बी॰ए॰ सप्तम सेमेस्टर (Honours With Research)

प्रश्नपत्र - साहित्य और समाज (BAHR705)

पूर्णांक – 100 (70+30)
क्रेडिट – 04

इकाई-1

- साहित्य और समाज का अंतर्संबंध।
- साहित्य की अवधारणा।
- साहित्य का समाजशास्त्र।

इकाई-2

- साहित्य की सामाजिक और ऐतिहासिक दृष्टि।
- साहित्य में सामाजिक विविधताएं।
- साहित्य और मानवीय मूल्य।

इकाई-3

- साहित्यिक रूपों का समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण।
- साहित्य में भारतीयता एवं जीवन–मूल्य।
- हिंदी साहित्य में भारतीय समाज।

इकाई-4

- हिंदी साहित्य और संस्कृति।
- हिंदी साहित्य और बदलता समाज।
- हिंदी साहित्य का सामाजिक योगदान।

संदर्भ ग्रंथ

1. भाषा और समाज – रामविलास शर्मा।
2. साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका – मैनेजर पांडेय।
3. भाषा का समाजशास्त्र – राजेंद्र प्रसाद सिंह।
4. साहित्य और समाज – रामधारी सिंह दिनकर
5. दर्शन साहित्य और समाज – शिवकुमार मिश्र
6. समाज साहित्य और आलोचना – अजय तिवारी।

नोट – संपूर्ण पाठ्यक्रम से दीर्घ एवं लघुउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे।

Course Outcomes

साहित्य और समाज

1. शोधकर्ता साहित्यिक ज्ञान को संकलित करते हुए शोध के लिए एक ठोस नींव बनाने का प्रयास करेगा। साथ ही अपने शोध विषय से संबंधित मौलिक तथ्यों और जानकारी को संकलित करने का प्रयास करेगा।
2. शोधकर्ता साहित्यिक सामग्री को समझते हुए शोध उद्देश्य को समझने का प्रयास करेगा।
3. शोधकर्ता अपने संग्रहित ज्ञान को वास्तविक शोध प्रक्रिया में लागू कर सकेगा तथा साहित्यिक सिद्धांतों, विश्लेषणात्मक उपकरणों और विचारों को व्यावहारिक तरीके से लागू करने का दृष्टिकोण विकसित कर सकेंगे।
4. शोधकर्ता साहित्यिक रचनाओं और उनके सामाजिक संदर्भ को गहरे स्तर पर विभाजित और विश्लेषित कर सकेंगे।
5. शोधकर्ता साहित्यिक कृतियों के गुण, प्रभाव और महत्व का आलोचनात्मक मूल्यांकन कर सकेंगे।
6. शोधकर्ता विभिन्न विचारों और साहित्यिक सिद्धांतों को जोड़कर एक नया निष्कर्ष या दृष्टिकोण प्रस्तुत कर सकेगा।

बी॰ए॰ अष्टम सेमेस्टर (Honours With Research)

प्रश्नपत्र - पाश्चात्य काव्यशास्त्र (BAHR801)

पूर्णांक – 100 (70+30)
क्रेडिट – 05

इकाई-1

- प्लेटो : काव्य के प्रति दृष्टिकोण एवं काव्य–सिद्धांत।
- अरस्तू : विरेचन सिद्धांत एवं त्रासदी विवेचन।
- लौंजाइनस : उदात्त संबंधी विचार।

इकाई-2

- टी.एस. इलियट : परंपरा और वैयक्तिक प्रतिभा का संबंध, निर्वैयक्तिकता का सिद्धांत।
- कॉलरिज : कल्पना–सिद्धांत, काव्य–भाषा और कविता।
- मैथ्यू आर्नोल्ड : कविता और जीवन, जीवन और समाज, आलोचना का स्वरूप और प्रकार्य।

इकाई-3

- आई.ए. रिचर्डस : मूल्य सिद्धांत।
- वर्ड्सवर्थ का काव्यभाषा का सिद्धांत।

इकाई-4

आधुनिक समीक्षा की विशिष्ट प्रवृत्तियां

- मार्क्सवाद।
- अस्तित्ववाद।
- संरचनावाद।
- शैली विज्ञान।
- उत्तर आधुनिकता।

संदर्भ ग्रंथ

1. अरस्तू का काव्यशास्त्र : डॉ॰ नगेंद्र।
2. पाश्चात्य काव्यशास्त्र का इतिहास : डॉ॰ तारकनाथ बाली।
3. नई समीक्षा के प्रतिमान : डॉ॰ निर्मला जैन।
4. पाश्चात्य काव्यशास्त्र : देवेंद्रनाथ शर्मा।
5. पाश्चात्य साहित्य चिंतन : निर्मला जैन।
6. पाश्चात्य काव्यशास्त्र : इतिहास, सिद्धांत और वाद : डॉ॰ भगीरथ मिश्र।

नोट – संपूर्ण पाठ्यक्रम से दीर्घ एवं लघुउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे।

Course Outcomes

पाश्चात्य काव्यशास्त्र

1. प्रथम सेमेस्टर में भारतीय काव्यशास्त्र की समझ विकसित हो जाने के उपरांत जब छात्र–छात्राएं पाश्चात्य काव्यशास्त्रियों के सिद्धांतों का अध्ययन करते हैं तो उनमें भारतीय एवं पाश्चात्य दोनों के सिद्धांतों को समझने की ज्ञान दृष्टि के साथ–साथ तुलनात्मक दृष्टि भी विकसित होती है तथा पाश्चात्य जगत के प्रसिद्ध काव्यशास्त्रियों जैसे– प्लेटो, अरस्तू, कॉलरिज, इलियट, आई.ए. रिचर्ड्स जैसे चिंतकों के काव्य सिद्धांतों द्वारा साहित्य का सैद्धांतिक एवं संवेदनात्मक पक्ष समझ आता है, जसका संपूर्ण प्रभाव उनके आचरण एवं मनोविज्ञान पर पड़ता है।
2. छात्र–छात्राएं काव्यालोचना की विविध पद्धतियों को समझते हुए उन्हें साहित्यिक पाठ के मूल्यांकन और विवेचन में लागू करने की दक्षता अर्जित करते हैं।
3. छात्र–छात्राएं आलोचना–सिद्धांतों (जैसे विरेचन, कल्पना, निर्वैयक्तिकता, उन्नयन आदि) को साहित्यिक विश्लेषण और व्याख्या में रचनात्मक रूप से प्रयोग कर सकते हैं।
4. छात्र–छात्राएं साहित्यिक दृष्टिकोणों में अंतर करना, वैकल्पिक व्याख्याएं प्रस्तुत करना तथा तर्कपूर्ण व विचारोत्तेजक शैली में अपने विचार व्यक्त करना सीखते हैं।
5. छात्र–छात्राएं आलोचनात्मक सिद्धांतों के माध्यम से साहित्य और समाज के मध्य संबंधों को समझते हुए मानवीय, नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों की पहचान करते हैं।
6. छात्र–छात्राएं आलोचना, लेखन, शिक्षण और संपादन जैसे क्षेत्रों में अपने विश्लेषणात्मक और व्याख्यात्मक कौशल के माध्यम से व्यावसायिक अवसरों के लिए तैयार होते हैं।

बी॰ए॰ अष्टम सेमेस्टर (Honours With Research)

प्रश्नपत्र - भाषा विज्ञान एवं हिंदी भाषा (BAHR802(i))

पूर्णांक – 100 (70+30)
क्रेडिट – 05

इकाई-1

- भाषा विज्ञान– परिभाषा एवं लक्षण।
- भाषा विज्ञान के अध्ययन की पद्धतियां।
- भाषा विज्ञान की विविध शाखाएं।
- भाषा व्यवस्था और भाषा विज्ञान।

इकाई-2

- स्वन विज्ञान और स्वनिम विज्ञान।
- स्वनों का वर्गीकरण।
- स्वनिम परिवर्तन के कारण।
- स्वनिम के भेद– खंडीय और खंडेतर।
- स्वन एवं स्वनिम का संबंध।

इकाई-3

- रूप प्रक्रिया का स्वरूप और शाखाएं।
- रूपिम की अवधारणा और भेद।
- शब्द और अर्थ का संबंध।
- अर्थ परिवर्तन : कारण और दिशाएं।
- अर्थ की अवधारणा एवं स्वरूप।
- वाक्य का स्वरूप, प्रकार।
- वाक्य की गहन आंतरिक संरचना।

इकाई-4

हिंदी भाषा : क्षेत्र एवं बोलियां

- हिंदी के विविध रूप।
- बोली और भाषा में अंतर।
- हिंदी का अखिल भारतीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप।
- हिंदी भाषा के विकास में कृत्रिम बुद्धिमता का योगदान।

संदर्भ ग्रंथ

1. हिंदी भाषा का इतिहास : धीरेंद्र वर्मा।
2. हिंदी भाषा का उद्‌गम और विकास : उदयनारायण तिवारी।
4. आधुनिक हिंदी के विविध आयाम : प्रो॰ कृष्ण कुमार गोस्वामी।
5. हिंदी का सामाजिक संदर्भ : रवींद्रनाथ श्रीवास्तव।
6. भाषा और भाषा विज्ञान : नरेश मिश्र।
7. भाषा विज्ञान : भोलानाथ तिवारी।
8. नवीन भाषा विज्ञान : तिलक सिंह।
9. भाषा विज्ञान एवं भाषाशास्त्र : कपिलदेव शास्त्री।
10. भाषा विज्ञान की भूमिका : देवेंद्र नाथ शर्मा।

नोट – संपूर्ण पाठ्यक्रम से दीर्घ एवं लघुउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे।

Course Outcomes

भाषा विज्ञान एवं हिंदी भाषा

1. इस पाठ्यक्रम से छात्र–छात्राएं भाषा एवं भाषा विज्ञान के स्वरूप, उसकी विविध शाखाओं और हिंदी भाषा की ध्वनियों, शब्द–संपदा व क्रिया–प्रणाली से संबंधित गहन आधारभूत ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।
2. छात्र–छात्राएं रूप, ध्वनि, शब्द, वाक्य–संरचना एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित भाषा उपयोग जैसे तकनीकी पक्षों को व्यावहारिक रूप से समझने और प्रयोग करने की क्षमता अर्जित कर सकते हैं। बहुभाषिकता जैसे संदर्भों में भाषा का व्यावहारिक एवं सैद्धांतिक पक्ष उजागर होने से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आधार पर भाषा की विविध शाखाओं का विवेचन एवं कार्यान्वयन किया जाएगा।
3. छात्र–छात्राएं हिंदी भाषा की संरचना और व्याकरणिक नियमों का उपयोग करके व्यावहारिक भाषा विश्लेषण एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता के अनुप्रयोग को व्यवहार में लाने में सक्षम होते हैं। विश्लेषणात्मक पद्धति द्वारा भाषा का विवेचन करने से उसके प्रति जिज्ञासा की समझ विकसित होगी तथा उसका विवेचन भाषा को सीखने में काम आएगा, जिससे वे प्रभावी रूप में अपनी बात लिखित व मौखिक रूप में व्यक्त करना सीखेंगे।
4. छात्र–छात्राएं हिंदी भाषा के अध्ययन के माध्यम से भाषाई विविधता, भारतीय भाषाई चेतना और समावेशी समाज की ओर नैतिक व मानवीय दृष्टिकोण विकसित करेंगे।
5. छात्र–छात्राएं भाषा विज्ञान और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के समन्वय से भाषा संसाधन, अनुवाद, शिक्षण तथा तकनीकी लेखन जैसे क्षेत्रों में रोजगार व स्वरोजगार प्राप्त कर सकते हैं।

बी॰ए॰ अष्टम सेमेस्टर (Honours With Research)

प्रश्नपत्र - समकालीन हिंदी कविता (BAHR802(ii))

पूर्णांक – 100 (70+30)
क्रेडिट – 04

इकाई-1

- कुंवर नारायण (1927)– नचिकेता, अंतिम ऊँचाई।

इकाई-2

- सुदामा पांडेय धूमिल (1936)– नक्सलबाड़ी, रोटी और संसद।

इकाई-3

- लीलाधर जगूड़ी (1940)– मातृमुख, ऋतुओं का दीप।

इकाई-4

- वीरेन डंगवाल (1947)– कैसी जिंदगी जिएं, मैं हूँ बसंत में, सुखद अकेलापन।
- मंगलेश डबराल (1948)– रोटी और कविता, पहाड़ पर लालटेन।

संदर्भ ग्रंथ

1. समकालीन हिंदी कविता– डॉ॰ विश्वनाथ प्रसाद तिवारी।
2. नयी कविता और नये कवि– डॉ॰ विश्वंभर मानव।
3. समकालीन हिंदी कविता– गंगा प्रसाद विमल।
4. नयी कविता नये कवि– डॉ॰ विश्वंभर मानव।

नोट – संपूर्ण पाठ्यक्रम से दीर्घ एवं लघुउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे।

Course Outcomes

समकालीन हिंदी कविता

1. विद्यार्थी समकालीन हिंदी कविता के प्रमुख कवि कुंवर नारायण, सुदामा पांडेय धूमिल, लीलाधर जगूड़ी, वीरेन डंगवाल, मंगलेश डबराल की रचनाओं की प्रमुख विशेषताओं, विचारभूमि, शिल्पगत प्रकृतियों को समझ सकेंगे।
2. विद्यार्थी विभिन्न कवियों की कविताओं का सामाजिक, राजनैतिक और सांस्कृति परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण कर सकेंगे।
3. विद्यार्थी समकालीन कविताओं का आलोचनात्मक दृष्टिकोण से मूल्यांकन कर सकेंगे।
4. विद्यार्थी शब्द संपदा, संप्रेषण तकनीकों को आत्मसात कर सकेंगे।
5. यह पाठ्यक्रम उन्हें साहित्यिक उद्यमिता की ओर प्रेरित करेगा।

बी.ए. अष्टम सेमेस्टर (Honours With Research)

प्रश्नपत्र - ब्लॉग लेखन (BAHR802(iii))

पूर्णांक – 100 (70+30)
क्रेडिट – 04

इकाई-1 : ब्लॉग लेखन – परिचय

- ब्लॉग परिचय।
- ब्लॉग लेखन का विकास।
- ब्लॉग लेखन का उद्देश्य और महत्व।

इकाई-2 : ब्लॉग के प्रकार और रचनात्मकता

- व्यक्तिगत ब्लॉग, पेशेवर ब्लॉग, व्यापारिक ब्लॉग और शैक्षिक ब्लॉग।
- ब्लॉग के विभिन्न रूप और प्लेटफॉर्म, प्रमुख सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, वर्डप्रेस, और ब्लॉगर।
- ब्लॉग लेखन और व्यक्ति रचनात्मकता।

इकाई-3 : ब्लॉग लेखन भाषा एवं संरचना

- ब्लॉग लेखन की संरचना : शीर्षक, परिचय, मुख्य बिंदु, निष्कर्ष।
- स्पष्टता, संक्षिप्तता और पठनीयता पर ध्यान, लक्षित पाठक केंद्रित लेखन।
- ब्लॉग लेखन की तकनीकें (एसईओ के मूल तत्व)।

इकाई-4 : ब्लॉग लेखन में आलोचना, मूल्यांकन और भविष्य की संभावनाएं

- ब्लॉग लेखन और साहित्य।
- हिंदी ब्लॉगिंग की संभावनाएं और भविष्य।
- डिजिटल इंडिया और हिंदी कटेंट क्रिएशन।

संदर्भ ग्रंथ

1. न्यू मीडिया और बदलता भारत– प्रांजलधर, कृष्णकांत, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली।
2. इंटरनेट जर्नलिजम– विजय कुलश्रेष्ठ, साहिल प्रकाश, जयपुर।
3. सोशल मीडिया और सामाजिक सरोकार– कल्याण प्रसाद वर्मा,साहिल प्रकाशन, जयपुर।
4. ऑनलाइन मीडिया– सुरेश कुमार, पिर्यसन प्रकाशन, भारत।
5. हिंदी ब्लॉगिंग का इतिहास– रवींद्र प्रभात, हिंदी साहित्य निकेत, बिजनौर।
6. सोशल मीडिया और ब्लॉग लेखन– स्नेहलता।
7. नए माध्यम, नई हिंदी– प्रो. हरिमोहन।
8. सोशल मीडिया– स्वर्ण सुमन।
9. मीडिया और बाजार– वर्तिका नंदा।

नोट – संपूर्ण पाठ्यक्रम से दीर्घ एवं लघुउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे।

Course Outcomes

ब्लॉग लेखन

1. इस पाठ्यक्रम से विद्यार्थी ब्लॉग लेखन की परिभाषा, विकास, उद्देश्य और महत्व की मूलभूत समझ विकसित करेंगे। उन्हें ब्लॉग के प्रकार, प्लेटफॉर्म (जैसे WordPress, Blogger) तथा सामाजिक और व्यावसायिक परिप्रेक्ष्य में ब्लॉगिंग के स्वरूपों का ज्ञान होगा।
2. विद्यार्थी ब्लॉग लेखन और रचनात्मकता के अंतर्संबंध को समझने में सक्षम होंगे।
3. विद्यार्थी ब्लॉग लेखन की संरचना (शीर्षक, परिचय, मुख्य बिंदु, निष्कर्ष) को व्यावहारिक रूप से सीखेंगे।
4. वे पठनीयता, संक्षिप्तता, स्पष्टता और लक्षित पाठक केंद्रित लेखन शैली को अपनाना सीखेंगे।
5. छात्र ब्लॉग लेखन की तकनीक, भाषा और रचनात्मकता को व्यवहार में लाते हुए स्वतंत्र ब्लॉग तैयार करने में सक्षम होंगे।
6. वे विभिन्न ब्लॉग प्रकारों (व्यक्तिगत, पेशेवर, शैक्षिक, व्यापारिक) में विषयवस्तु का सृजन करना सीखेंगे।
7. ब्लॉग लेखन के माध्यम से छात्र सामाजिक, नैतिक और मानवीय मुद्दों पर विचार करने की क्षमता विकसित करेंगे और वे समाज के प्रति अपनी सामाजिक प्रतिबद्धता व्यक्त कर सकेंगे।
8. डिजिटल इंडिया अभियान और हिंदी सामग्री निर्माण के संदर्भ में यह पाठ्यक्रम उन्हें रचनात्मक और आर्थिक रूप से सक्षम बनाता है।

बी॰ए॰ सप्तम सेमेस्टर (Honours With Research)

प्रश्नपत्र - शोध लेखन एवं नीतिशास्त्र (BAHR803)

पूर्णांक – 100 (70+30)
क्रेडिट – 03

इकाई-1

i. शोध की अवधारणा और स्वरूप, अनुसंधान और आलोचना।
ii शोध की प्रक्रिया, विषय–चयन, शोध की प्रारंभिक पृष्ठभूमि।

इकाई-2

i. अनुसंधान के मूल तत्व, अनुसंधान के प्रकार।
ii शोध सामग्री संकलन : प्रश्नोत्तरी, साक्षात्कार, शोध–पत्र, आधार ग्रंथ एवं लेखों का संकलन, पाठानुसंधान।

इकाई-3

i. शोध कार्य का विभाजन, अध्याय तथा उप–अध्याय, विषय–सूची, प्रस्तावना, अनुक्रमणिका, संदर्भ लेखन।
ii शोध का प्रस्तुतीकरण।

इकाई-4

i. प्रकाशन नैतिकता : परिभाषा और महत्व, सर्वोत्तम प्रथाएं तथा मानक स्थापित करने की पहल और दिशा–निर्देश : (सीओपीई, डब्ल्यूएएमई), प्रकाशक कॉपीराइट।

संदर्भ ग्रंथ

1. शोध प्रविधि – डॉ॰ विनय मोहन सिंह।
2. अनुसंधान की प्रक्रिया – डॉ॰ ज्ञानप्रकाश गुप्त।
3. अनुसंधान के मूल तत्व – डॉ॰ उदयभानु सिंह
4. अनुसंधान की प्रक्रिया – डॉ॰ सावित्री सिन्हा तथा विजयेंद्र स्नातक।
5. https://publicationethics.org/
6. https://publicationethics.org/guidance/case/wame-case

नोट – संपूर्ण पाठ्यक्रम से दीर्घ एवं लघुउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे।

Course Outcomes

शोध लेखन एवं नीतिशास्त्र

1. शोध लेखन की प्रक्रिया को समझ सकेंगे।
2. उच्चतम शोध की क्षमता विकसित होगी।
3. नीतिशास्त्र का परिचय प्राप्त होगा और अच्छे शोध के परिप्रेक्ष्य में उच्च मानदंड स्थापित करने के लिए प्रेरणा मिलेगी।

बी॰ए॰ अष्टम सेमेस्टर (Honours With Research)

प्रश्नपत्र - लघुशोध (BAHR804)

पूर्णांक – 100
क्रेडिट – 12

निर्देश :

1. लघुशोध प्रबंध हेतु छात्र/छात्राओं को सेमेस्टर प्रारंभ होते ही विभागाध्यक्ष से आवश्यक संपर्क करना होगा ताकि समयानुसार लघुशोध कार्य आवंटित हो सके।
2. लघुशोध प्रबंध का विषय छात्र/छात्रा द्वारा लघुशोध निर्देशक के परामर्श पर चुना जाएगा।
3. मूल्यांकन से पूर्व पुस्तकालय से **Plagiarism Report** लघुशोध प्रबंध के साथ जमा करना अनिवार्य है।
4. लघुशोध प्रबंध का मूल्यांकन एक बाह्य परीक्षक के साथ संयुक्त रूप से किया जाएगा।

निर्धारित पाठ्यक्रम :

हिंदी साहित्य के किसी भी विषय पर लघुशोध किया जा सकता है, जिसका अंक विभाजन इस प्रकार होगा–

1. लघुशोध मूल्यांकन – 50 अंक।
2. मौखिकी – 20 अंक।
3. आंतरिक परीक्षा – 30 अंक।

बी॰ए॰ अष्टम सेमेस्टर (Honours With Research)

प्रश्नपत्र - हिंदी साहित्य की वैचारिकी (BAHR805)

पूर्णांक – 100 (70+30)
क्रेडिट – 04

इकाई-1

- विचारधारा और साहित्य।
- मध्ययुगीन बोध।
- भक्ति आंदोलन।

इकाई-2

- भक्तिकाल की सामाजिक परिस्थिति।
- पुनर्जागरण और भारतेंदु युग का काव्य।
- द्विवेदी युग और लोक जागरण।

इकाई-3

- गांधीवाद (सत्य, अहिंसा और स्वराज)।
- राष्ट्रीय स्वातंत्र्य आंदोलन।
- समाजवाद।

इकाई-4

- दलित चेतना।
- स्त्री–विमर्श।
- आंचलिकता और महानगरीय बोध।

संदर्भ ग्रंथ

1. संस्कृति के चार अध्याय – रामधारी सिंह दिनकर।
2. हिंदी साहित्य की भूमिका – डॉ॰ हजारी प्रसाद द्विवेदी।
3. भक्ति काव्य की भूमिका – डॉ॰ प्रेमशंकर।
4. आज का दलित साहित्य – तेज सिंह।
5. मध्यकालीन बोध स्वरूप – डॉ॰ हजारी प्रसाद द्विवेदी।
6. दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र – शरणकुमार लिंबाले।

नोट – संपूर्ण पाठ्यक्रम से दीर्घ एवं लघुउत्तरीय प्रश्न पूछे जाएंगे।

Course Outcomes

हिंदी साहित्य की वैचारिकी

1. साहित्य के परिवेश और वैचारिकी की विस्तृत जानकारी प्राप्त होगी।
2. लेखक, रचना और पाठक के परिप्रेक्ष्य में आलोचनात्मक चिंतन विकसित होगा।
3. साहित्य जगत के समक्ष उत्पन्न होती चुनौतियों और नवीन संभावनाओं की समझ उत्पन्न होगी।
4. परिणामतः दशा और दिशा की समझ विद्यार्थी में आलोचनात्मक चिंतन को गहराई प्रदान करेगा।

Rohit Kumar.

29/8/2025

प्रो. गुड्डी बिष्ट पंवार,
संयोजक एवं विभागाध्यक्षा – हिन्दी विभाग
हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल (केंद्रीय) विश्वविद्यालय,
श्रीनगर गढ़वाल, उत्तराखंड–246174

प्रो० गुड्डी बिष्ट
संयोजक एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
हे०न०ब०ग० केन्द्रीय वि० वि० श्रीनगर (ग०)